भजन

आई जागनी की घड़ी, नूर की बारिश हुई

ए मेरे वतनी सुनो आ गए प्यारे धनी

1 दूर और नजदीक का सब नजारा है दिया
देके निजबुद्ध धाम की हमको अरस परस किया
इस कद्र आए धनी लागी मेहरों की झड़ी

2 दे दी हमें तन्हाईयां फिर बजाई शहनाईयां
संयोग और वियोग में जानी तेरी मेहरबानीयां
दी हजूरी बंदगी बदल दी है जिंदगी

3 छुड़ा दिए बंधन कर्म मिट गए सारे भरम
देके तारतम ज्ञान हमें समझा दिए सारे मरम
सात क्यामत के निशान बोली हक की जुबान